India's First E Magazine Dedicated to Indian Music
Bilingual

संगीत वन्दन

April 2025 Year 3 Issue 16

यह अंक समर्पित आकाशवाणी

Dr. Vandana Khurana
Asst. Prof. Music Vocal,
Rajasthan Sangeet Sansthan,
Govt. P G College,Jaipur(Raj.)

संगीत वन्दन के सभी पाठकों को हमारा सादर प्रणाम

भारतीय संगीत को सदैव ही अनमोल धरोहर के रूप में संरक्षण प्राप्त हुआ है। समय परिवर्तन के साथ इसके संरक्षक भी परिवर्तित होते रहे और इसी क्रम में आधुनिक काल विज्ञान एवं तकनीकी के युग में जब रेडियो अस्तित्व में आया तो संगीत को एक नवीन संरक्षक "आकाशवाणी" के रूप में प्राप्त हुआ।

संगीत और आकाशवाणी के इस अटूट संबंध के कारण आकाशवाणी ने भारतीय संगीत का प्रचार प्रसार करने एवं इसे संरक्षित करने में जो योगदान दिया है उसे ही उजागर करने का प्रयास हम संगीत वन्दन के अप्रैल 2025 के अंक में करने का प्रयास करते हुए यह अंक आकाशवाणी को समर्पित करते हैं।

'भारतीय संगीत एवं आकाशवाणी'

आकाशवाणी जिसे हम पहले ऑल इंडिया रेडियो के नाम से भी जानते थे। आज आकाशवाणी विश्व का सबसे बड़ा ब्रॉडकास्टिंग नेटवर्क है।

आकाशवाणी के अस्तित्व की कहानी.....

आकाशवाणी का आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' जिसका अर्थ है आने का अनेक लोगों के हित के लिए और सुख के लिए। आज भी आकाशवाणी पर गांव के लोग अपने लोकगीतों को सुनते हैं और उनके साथ गुनगुनाते हैं। प्रारम्भ में आकाशवाणी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत आता था तथा बाद में 1990 में इसे एक स्वतंत्र संस्था - 'प्रसार भारती' के अंतर्गत लाया गया। आकाशवाणी की लॉन्च डेट 8 जून 1936 है उस समय इंडिया रेडियो के नाम से प्रारंभ कोलकाता सेंटर के उद्घाटन के समय रविंद्र नाथ टैगोर ने कविता सुनाकर इसे 'आकाशवाणी' नाम देने का सुझाव दिया था। पंडित नरेंद्र शर्मा, जिनका विविध भारती को सेट करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा था, की ही सिफारिश पर 1956 में ऑल इंडिया रेडियो का नाम आकाशवाणी कर दिया गया। 1920 के दशक में बीबीसी ,रेडियो सिलोन, आकाशवाणी....यह सभी अस्तित्व में आ चुके थे और यह तीनों दुनिया के सबसे पुराने रेडियो नेटवर्क है। 1921-22 में कुछ प्रयोगात्मक ब्रॉडकास्टिंग शुरू हो गई थी किंतु प्रथम नियमित ब्रॉडकास्टिंग 1923 में मुंबई से शुरू हुई ,रेडियो क्लब द्वारा। इस प्रकार कोलकाता में भी एक रेडियो क्लब की शुरुआत हुई। 1929 तक आते-आते रेडियो क्लब को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर सभी क्लब ने मिलकर एक कंपनी बनाई- आईबीसी (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी)। ऑल इंडिया रेडियो या आज का आकाशवाणी इसकी शुरुआत आईबीसी से ही हुई।

इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी जिसके दो प्रमुख स्टेशन रहे - कोलकाता एवं मुंबई। 1930 के आते-आते यह कंपनी दिवालिया हो गई , ब्रिटिश सरकार ने इसको अपने हाथों में ले लिया और इसको नाम दिया- इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस। प्रारंभ में यह बहुत ही घाटे में चलने वाली सर्विस थी किंतु अंग्रेजों ने ट्रांसमिशन से संबंधित सभी सामान जो आयात हो होता था, उन पर तथा रेडियो रखने पर जो टैक्स भरना पड़ता था उसे बढ़ाकर इसे मुनाफ़ा युक्त बना दिया। इसी कड़ी में 1935 में बीबीसी लंदन से एक विशेषज्ञ मिस्टर लाईडन फील्ड को भारत बुलाया गया और इन्होंने ने ही इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस का नाम बदल कर इसे 'ऑल इंडिया रेडियो(AIR)' नाम दिया।

1947 में देश आज़ाद हुआ और आकाशवाणी भारत सरकार के अधिकार क्षेत्र में आया, तब तक यह AIRही कहलाता था। इसके 9 बड़े स्टेशन थे, जिनमें से 6 भारत में रहे और तीन पाकिस्तान में।

तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री बी वी केसकर का रुझान भारतीय शास्त्रीय संगीत की तरफ था किंतु फ़िल्म संगीत के प्रति उदासीनता थी जिसके चलते उन्होंने AIR पर फ़िल्म संगीत बंद करवा दिया। इसका फ़ायदा रेडियो सीलोन ने उठाया और फ़िल्म संगीत से खूब प्रसिद्धि पायी। किन्तु बाद में 1957 में स्थापित विविध भारती पुनः फ़िल्म संगीत का प्रसारण कर रेडियो सीलोन से वो प्रसिद्धि वापस ली। तब से अब तक विविध भारती भारत का सबसे प्रसिद्ध केंद्र बना हुआ है।

आकाशवाणी और संगीत

हमारे देश का हर प्रकार के संगीत,चाहे शास्त्रीय हो, सुगम हो या लोक संगीत हो ,का आकाशवाणी से अटूट संबंध रहा है। घर घर तक संगीत पहुंचाने का श्रेय इसे ही जाता है। हमारे देश का हर प्रकार का संगीत हमारी संस्कृति एवं परम्परा से जुड़ा है, संस्कृति का अभिन्न अंग है। देश में हुए मुस्लिम आक्रमण ,मुगल शासन या ब्रिटिश राज ....इन सभी ने हमारी संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव ही डाला। अतः अपनी संस्कृति एवं परंपराओं को सुरक्षित करने का एक मात्र मार्ग था, उसे आगामी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना और इसके लिए आवश्यक था कि आगामी पीढ़ी का उसमें रुचि लेना और उसकी विधिवत शिक्षा लेना। आकाशवाणी ने प्रारम्भ से ही अपने विभिन्न कार्यक्रमों के प्रसारण के माध्यम से देश के संगीत को घर घर पहुंचा, लोगों में रुचि पैदा की जिससे संगीत की शिक्षा को बढ़ावा मिला।

मैं स्वयं यदि अपनी बाल्यावस्था के दोनों को याद करती हूं तो सुबह-सुबह संगीत सरिता नमक शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम से स्वयं को प्रेरित महसूस करती हूं रोज एक नया राज सुना और फिर उसे पर आधारित एक फिल्मी गीत सुना यह सब रागों के प्रति जिज्ञासा जागृत करता था धीरे-धीरे रुझान बड़ा तथा शास्त्रीय संगीत को विधिवत रूप से सीखने के लिए प्रेरित हुई तथा रेडियो पर और कार्यक्रम सुनने की जिज्ञासा भी बड़ी जिसके चलते दोपहर का अनुरंजनी कार्यक्रम सुनना शुरू किया यह सब उदाहरण मात्र है कि किस प्रकार आकाशवाणी संगीत शिक्षा के लिए प्रेरित करती रही।

आज़ादी के बाद भारत सरकार द्वारा योजना बद्ध कार्यों की शुरुआत हुई जिसमें आकाशवाणी में शास्त्रीय संगीत में भी कहीं बेहतरीन नवाचार प्रारंभ हुए, जिसमें सबसे प्रथम है 1952 में संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम का प्रसारण ,जिसका प्रारंभ 20 जुलाई 1952 को आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र से हुआ और प्रथम कार्यक्रम में पंडित रविशंकर जी का सितार वादन प्रस्तुत किया गया। उसके बाद से आज तक शास्त्रीय संगीत जगत के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ नए उभरते हुए कलाकारों की प्रस्तुतियां प्रसारित की जाती हैं।

साथ ही 1952 में ही मुंबई केंद्र पर प्रथम आकाशवाणी संगीत एकांश एवं आकाशवाणी वाद्य वृंद की स्थापना हुई। इसकी शुरुआत आकाश वाणी के दिल्ली केंद्र से हुई जिसमें 27 वाद्य सम्मिलित थे। पंडित रवि शंकर के प्रयास इस क्षेत्र में सबसे अधिक रहे और वाद्य वृंद में वाद्यों की संख्या उन्होंने 60 से भी अधिक कर दिखायी।

1954 में रेडियो संगीत सम्मेलन प्रारंभ हुआ।
शास्त्रीय संगीत के बाद आकाशवाणी ने सुगम एवं फ़िल्म संगीत पर ध्यान देते हुए 1957 में प्रथम सुगम संगीत समारोह तथा मनोरंजन एवं फ़िल्म संगीत के प्रसारण के लिए विविध भारती सेवा प्रारंभ की । साथ ही स्वर परीक्षा के लिए समितियां बनना प्रारंभ हुई 1973 से लोक संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रसारित होने लगा जिसे प्रादेशिक अखिल भारतीय कार्यक्रम नाम दिया गया।

आकाशवाणी का एक रचनात्मक पहलू है उसके द्वारा प्रसारित प्रातः कालीन एवं रात्रि कालीन संगीत सभाएं जिनमें समय अनुसार रागों का गायन वादन प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही आकाशवाणी विभिन्न प्रतिष्ठित कलाकारों की जयंतियों के अवसर पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण करता है और देश के विभिन्न भागों में होने वाले संगीत समारोह एवं सम्मेलनों की रिकॉर्डिंग को भी प्रसारित किया जाता है। संगीत की शिक्षा को प्रोत्साहन देने के प्रयासों में एक प्रयास है आकाशवाणी का 'महफिल' नामक कार्यक्रम जिसमें अनेक कलाकारों की गायन वादन शैलियों पर चर्चा, उनकी उपलब्धियां ,उनकी संगीत शिक्षा पर चर्चा श्रोताओं को संगीत सीखने एवं सुनने के लिए प्रेरित करती है। आकाशवाणी संगीत संबंधित विषयों की चर्चा पर आधारित 'संगीत पत्रिका' नामक एक कार्यक्रम भी प्रसारित करता है। यह कार्यक्रम संगीत विषय के विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए लाभकारी होता है।

युवा पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत के लिए प्रेरित करते हुए संगीत प्रतियोगिता भी आकाशवाणी का एक महत्वपूर्ण कदम है। इनमें सभी विधाओं यथा शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत तीनों को सम्मिलित किया जाता है । प्रतियोगिता के विजेताओं को न केवल आकाशवाणी कार्यक्रमों के प्रसारण का अवसर मिलता है बल्कि साथ ही पुरस्कार भी दिए जाते हैं।

सुगम संगीत के क्षेत्र में भी आकाशवाणी सक्रिय है। आकाशवाणी सुबह शाम भजनों के कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसके अतिरिक्त सूफियाना संगीत एवं कव्वाली संगीत के कार्यक्रमों का भी प्रसारण नियमित रुप से किया जाता है ।

लोक संगीत के संरक्षण में भी आकाशवाणी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है आकाशवाणी का प्रत्येक केंद्र अपने क्षेत्र के लोक संगीत के कलाकारों को नियमित रुप से आमंत्रित करता रहता है तथा कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग भी नियमित रुप से होती है ।इससे स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन एवं आर्थिक संरक्षण मिलता है ।आकाशवाणी का अपना रिकॉर्डिंग आर्काइव अपने आप में एक अनमोल खजाने जैसा है जो हमारी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग 'रत्न-आभूषण रुपी संगीत' को संजोए हुए हैं। आकाशवाणी भारतीय संगीत का एक संरक्षक है

सभी लेखकों से ई-पत्रिका हेतु संगीत से संबंधित स्वतंत्र आलेख एवं ई पत्रिका के नियमित भागों (किताबों की बातें, लोकरंग, news and events एवं फिल्म संगीत)पर आधारित आलेख एवं सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

E-mail: vandansangeet@gmail.com
Mobile No: 9664257501,9413974931
Address: Plot no 28,SBI Colony, Tonk Phatak, Jaipur-302015

भारतीय संगीत में विविध भारती केन्द्र उदयपुर की प्रासंगिकता एवं वर्तमान स्थिति

भारतीय संगीत में विविध भारती प्रसारण सेवा का किस प्रकार योगदान है वह इस लेख में दर्शाया गया है। इस पत्र में विश्लेषणात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जैसाकि विदित है भारतीय संगीत परम्परा का उद्गम सामवेद से माना गया है। आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक मनुष्य को कल्याण पथ पर ले जाना ही संगीत का कार्य रहा है तथा मानव समुदाय की आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति करने का प्रमुख अंग संगीत ही माना गया है। विविध भारती कार्यक्रम को अधिक से अधिक श्रोता सुने व उससे लाभान्वित हो, यही विविध भारती राष्ट्रीय प्रसारण सेवा का उद्देश्य है। विविध भारती ने अनेकों कार्यक्रमों द्वारा मनोरंजन के सभी पक्षों को उद्घाटित करने का कार्य हमेशा किया है जिसमें 'संगीत' को विशेष महत्त्व दिया है। विविध भारती द्वारा संगीत के प्रसारण के फलस्वरूप लोगों का सांस्कृतिक स्तर उन्नत हुआ तथा प्रत्येक भारतीय को अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर के विषय में जानकारी प्राप्त हुई।

भारतीय संगीत का उद्गम सामवेद से माना गया है। संगीत का कार्य चाहे कोई भी काल व स्थान हो मनोरंजन करना रहा है। संगीत मनुष्य में अनुशासन, प्रेम, नैतिकता व सौहादर्् की भावना पैदा करता है और संगीत हमेशा ही प्रांतीयता, भाषा, जाति व धर्म से ऊपर उठकर सभी को सामूहिक करने का प्रयास करता रहता है तथा संस्कृति के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है- संगीत। संगीत एक श्रव्य कला होने के कारण किसी न किसी माध्यम पर अपने विकास हेतु निर्भर रहता है। जैसे - रेडियो, टी.वी. संगीत सम्मेलन आदि। संगीत का सबसे उपयुक्त श्रव्य माध्यम रेडियो ही है।

विविध भारती आकाशवाणी का एक ऐसा कार्यक्रम है जिसे 30 करोड़ से अधिक श्रोता सुनतें है। प्रतिदिन अब तक विविध भारती कार्यक्रम 12 घंटे 45 मिनिट प्रसारित किया जाता रहा है। इस कार्यक्रम का 60 प्रतिशत हिस्सा लगभग चित्रपट संगीत को दिया जाता था परन्तु बाद में इसके प्रसारण का समय सुगम और शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा कम कर दिया गया। पहले कुल प्रसारण का 90 प्रतिशत भाग संगीत के लिए आरक्षित रहता था तथा जिसे बाद में 40 प्रतिशत कर दिया गया। "विविध भारती आकाशवाणी की सर्वाधिक मनोरंजन प्रधान सेवा है। विविध भारती से फिल्म संगीत, सुगम संगीत, हास्य विनोद् से भरपूर झलकियाँ, लघु नाटिकाएं और लघु वार्ताएं प्रसारित होती है" तथा "विविध भारती ने स्वर्ण जंयती वर्ष के रूप में 2006-2007 को मनाया।"

आकाशवाणी के मशहूर चैनल विविध भारती ने 3 अक्टूबर 2023 को 66 वर्ष पूर्ण कर लिए है। अब तक यह सेवा 15 से 17 घंटे लगातार मनोरंजन प्रदान करती रही है जिसमें फिल्म-संगीत की विशेष भूमिका है तथा इस पर हिन्दी फिल्मी गीत सुनवाए जाते है। विविध भारती सेवा मुंबई से शुरू की गयी। इस पर पहला गाना 'नाच रे मयूरा' बजा जो पं. नरेन्द्र शर्मा ने लिखा और संगीतकार अनिल विश्वास ने इसे स्वरबद्ध किया था तथा आवाज 'मन्ना डे' ने दी थी। विविध भारती की कल्पना शुरुआत में 'डाइजेस्ट प्रोग्राम' के रूप में की गई थी जैसे डाइजेस्ट साहित्य। इसका प्रयास मुख्य रूप से हल्का संगीत, भक्ति संगीत, लोकगीत, रिकॉर्ड किए गए फिल्मी गानें और इसी तरह का कार्यक्रम प्रस्तुत करना था।

इसी क्रम में 5 मार्च 1967 को उदयपुर में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना हुई जिसके अंतर्गत विविध भारती प्रसारण सेवा का उदयपुर में प्रसारण आरंभ हुआ।

विविध भारती के संगीत पर आधारित कार्यक्रम है -

(i) संगीत-सरिता - ये सुबह 6.45 बजे प्रसारित विविध भारती का लोकप्रिय कार्यक्रम है।
(ii) भारत की गूंज - प्रात: 8.30 बजे इस कार्यक्रम में नये फिल्मी गीतों को प्रसारित किया जाता है।
(iii) सुहाना सफर - रोजाना दिन के 12 बजे प्रसारित होने वाले इस कार्यक्रम को अपनी स्वर्ण जयंती 2007 के अवसर पर विविध भारती ने इसे शुरू किया था।
(iv) आज के फ़नकार - ये कार्यक्रम सुबह 9.30 बजे आता है।
(v) सखी-सहेली - दोपहर तीन बजे "इस कार्यक्रम में महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करते हुए उनकी पसंद के नग़मे सुनवाए जाते है।"
(vi) पिटारा - शाम 4 बजे प्रसारित एक बड़ा सा पिटारा जिसमें कभी 'हेल्लो' फरमाइश फोन कॉल के जरिए गानों की फरमाईश तो कभी 'सरगम के सितारे' (संगीत की दुनिया के दिग्ग्ाजों से बातचीत) रोज़ अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है।
(vii) जयमाला - शाम 7 बजे प्रसारित ये कार्यक्रम विशेष रूप से फोजियो के लिए शुरू किया गया था तथा उन्हीं के पसंदीदा नग़मे सुनाये जाते थे। ये सोमवार से शुक्रवार इसी फॉर्मेट पर चलता था।

(vii) जयमाला – शाम 7 बजे प्रसारित ये कार्यक्रम विशेष रुप से फोजियो के लिए शुरु किया गया था तथा उन्हीं के पसंदीदा नग़मे सुनाये जाते थे। ये सोमवार से शुक्रवार इसी फॉर्मेट पर चलता था।
(viii) छायागीत – रात्रि 9.30 बजे विविध भारती राष्ट्रीय सेवा पर गीतों से सजा कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता है।
(ix) अनुरंजनी – "अनुरंजनी नामक शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का प्रसारण विविध भारती द्वारा किया जाता है।"
(x) गीतानुरंजन – ये मधुर गीतों का कार्यक्रम है जो विविध भारती द्वारा श्रोताओं को सुनवाया जाता है।
(xi) गाता रहे मेरा दिल – ये कार्यक्रम भी विविध भारती द्वारा श्रोताओं को सुनवाया जाता है।
(xii) प्रभाती – ये कार्यक्रम प्रात:कालीन गीतों के साथ दिन की शुरुआत करता है।
(xiii) साज़ और आवाज़ – ये कार्यक्रम शाम को श्रोताओं को सुनवाया जाता है।
(xiv) गीत गुंजन – ये कार्यक्रम दोपहर 2.30 बजे सुनवाया जाता है।
(xv) बीना का गीतमाला – विविध भारती द्वारा इस कार्यक्रम को भी प्रसारित किया जाता है।

अत: विविध भारती प्रसारण द्वारा शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत एवम् सुगम संगीत जिसमें भजन व कव्वाली तथा लोक संगीत, भक्ति संगीत, चित्रपट संगीत, वाद्यवृन्द संगीत, रुपक आदि संगीत की विधाओं को श्रोताओं को सुनवाया जाता है। उदयपुर आकाशवाणी केन्द्र द्वारा विविध भारती राष्ट्रीय प्रसारण सेवा के माध्यम से वर्तमान में कुछ इस प्रकार संगीत से जुड़े कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है – "दिन की शुरुआत में प्रात: 5.53 मिनिट पर 2 मिनिट 'संकेत धुन' (जो कि संगीत पर आधारित है), 5.55 मिनिट पर 5 मिनिट 'वंदे मातरम् राष्ट्रीय गीत' (आरंभिक उद्घोषणा मंगल ध्वनि), 6.35 पर 20 मिनिट 'श्रीरामचरित्मानस', 6.45 पर 15 मिनिट 'संगीत सरिता कार्यक्रम', 7.00 बजे 30 मिनिट 'भूले बिसरे गीत कार्यक्रम' इसके अन्तर्गत उत्पादों का विज्ञापन किया जाता है जिसमें संगीत धुन का प्रयोग होता है अर्थात् संगीत के माध्यम से जनता को लुभाने का प्रयास किया जाता है।

7.30 बजे 30 मिनिट 'हम है राही प्यार के' कार्यक्रम में भी उत्पादों का विज्ञापन किया जाया है जिसमें संगीत का सहारा लिया जाता है। 8.30 बजे 1 घण्टा 'भारत की गूँज कार्यक्रम' दोपहर 1.00 बजे 1 घण्टा 'कुछ बातें कुछ गीत कार्यक्रम', 2.30 बजे 30 मिनिट 'गीत गुंजन' कार्यक्रम, 3.00 बजे 1 घण्टा 'सखी सहेली कार्यक्रम', 4.00 बजे 1 घण्टा 'पिटारा कार्यक्रम', शाम 5.00 बजे 30 मिनिट 'गुड़ इवनिंग लेकसिटी' (नये गावें), 5.30 पर 30 मिनिट 'सदाबहार नगमें', 6.00 बजे 1 घण्टा 'अंताक्षरी' (व्हॉटसएप पर), 7.00 बजे 45 मिनिट 'जयमाला कार्यक्रम', 9.30 बजे 30 मिनिट 'छायागीत कार्यक्रम' जिसके अंतर्गत भी विज्ञापन का प्रसारण होता है जिसमें संगीत का प्रयोग किया जाता है। रात्रि 10.00 बजे 1 घण्टा 'गीत गाता चल कार्यक्रम' प्रसारित किया जाता है।" विविध भारती के कुल दिनभर के 33 कार्यक्रमों में से अधिकांश कार्यक्रम संगीत से जुड़े होते है या उनमें संगीत का प्रयोग अच्छी खासी मात्रा में किया जाता है।

आज विविध भारती डायरेक्ट टू होम सेवा (DTH) के माध्यम से 24 घंटे उपलब्ध है। दिनभर विविध भारती शॉटवेव, मीडियम वेव व एफ.एम. पर भी उपलबध रहती है। लगभग 110 के आसपास स्थानीय एफ.एम. चैनल विविध भारती सेवा के कार्यक्रमों को अपने दिन के प्रसारणों का हिस्सा बनाते है। विविध भारती ने छोटे-छोटे कस्बों व गाँवों में भी अपनी गहरी पैठ बनाई है। विविध भारती ने बदलते वक्त के साथ-साथ अपना रुप भी बदला व तमाम दूसरे एफ.एम. चैनलो की तरह मोबाइल इंटरनेट पर विविध भारती उपलब्ध है। 102.8 FM विविध भारती का आधुनिक चेहरा है। भारत रत्न लता मंगेशकर की एक टिप्पणी जिसमें उन्होंने कहा था अगर विविध भारती न होता तो हम मंगेशकर बहनों (लता, उषा, आशा) की आवाज़ देश के कोने-कोने तक न पहुँचती इसीलिए तो विविध भारती को देश की सुरीली धड़कन कहा गया है जो हर दिल में धक-धक करती है। विविध भारती ने 'उज़ाले उनकी यादों' के नामक एक कार्यक्रम शुरु किया- इस कार्यक्रम में संगीतकार नौशाद, ओपी नैयर, रवि, लक्ष्मी प्यारे की जोड़ी के प्यारेलाल, वहीदा रहमान, लीना चंदावरकर, गायक महेन्द्र कुमार, संगीतकार कल्याण जी आनंद जी की जोड़ी के आनंद जी आदि हस्तियों से लंबी बातचीत की गयी है तथा उनकी छह से दस घंटे एवम् उससे अधिक की रिकॉडिर्ंग करके विविध भारती ने इतिहास को समेटने का कार्य किया है।

मनोरंजन की लम्बी विरासत को एवं "उस धरोहर को और उस दौर की बहुत सी यादों को संजोकर आज भी उस परंपरा को विविध भारती कायम रखे हुए है।" अत: अपनी सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण कर उसमें हम सभी अपना योगदान दे सकते है।

किरण डाँगी
शोधार्थी, संगीत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

हिंदुस्तानी संगीत में ऋतुओं का प्रयोजन

भारतीय ऋतुओं की मनमोहक प्रकृति ने यहाँ के साहित्य ,संगीत और कला को सामान रुप से प्रभावित किया है । भारत के रीतिकालीन साहित्य और मध्ययुगीन चित्रकला में इन ऋतुओं का यह सौन्दर्य भारतवर्ष के जन-जीवन को ही नहीं अपितु यहाँ के शास्त्रीय संगीत को भी इससे प्रेरणा मिली है । जिसके फलस्वरुप बसंत, मेघ, मल्हार अनेक रागों की उत्पत्ति हुई । बसंत ऋतु से बसंत राग और वर्षा-ऋतु से मेघमल्हार अदि रागों के स्वर-चित्र अंकित किए गए हैं।

भारत की संगीत-कला, काव्य कला और चित्र-कला में प्रायः सभी ऋतुओं पर रचनाएँ देखने को मिलती हैं, परन्तु यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो बसंत और वर्षा सम्बन्धी रचनाओं के सामने अन्य ऋतुओं की रचनाएँ उँगलियों पर गिनी जा सकती हैं । ये कलाएँ आदि काल से ही अपनी भाव – प्रवणता एवं श्रंगारिकता के लिए जगत – विख्यात हैं । इस दृष्टि से वर्षा और बसंत ही ऐसी सी दो ऋतुएं हैं जिनसे श्रंगारिक भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति की जा सकती है । इन ऋतुओं की रसीली प्रकृति किसी भी भावुक को सहज में ही मुग्ध कर लेती हैं । संगीतकार हों , साहित्यकार या चित्रकार सभी इन ऋतुओं की श्रंगारिक प्रकृति से प्रेरित होकर कलात्मक सृजन की ओर प्राकृत होते हैं। भारतीय संगीतकार सदियों से इन सप्त स्वरों का सम्बल ले एक से एक मोहक राग-रचना करता आ रहा है। जिससे जीवन के प्रत्येक क्षण का भिन्न – भिन्न स्वर-चित्र हमारी आँखों के सामने मूर्तिमान हो उठता है । संगीत के इन्हीं स्वरों की उपज से भारतीय चित्र-कला में एक से एक अद्भभुत और अनूठे राग-चित्र रचे गए, जिन्हें देखकर साधारण दर्शक अक्सर भ्रम में पड़ जाते हैं और उन्हें वह व्यावहारिक जीवन के चित्र समझ बैठते हैं, वास्तव में राग सम्बन्धी ये चित्र उन रागों से उत्पन्न भाव-दृश्यों को ही चित्रित करते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय संगीत भाव-प्रधान संगीत है । ऋतुओं का भारतीय संगीत में महत्व अत्यधिक महत्त्व है तथा परम्पराएँ और संस्कृति भी ऋतु-रंग से रंगी हुई हैं। ऋतुओं का प्रभाव भारत के लोक तथा शास्त्रीय संगीत दोनों पर ही है ।

लोकसंगीत में ऋतुओं की भूमिका - भारतीय संगीत मुख्य रुप से प्रकृति और प्राचीन परम्पराओं से जुड़ा हुआ है । लोक संगीत का सम्बंध प्राचीन परम्पराओं तथा उससे जुड़ी पूर्व में घटी घटनाओं, समाज एवं संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है। कृषि प्रधान देश प्रकृति के निकट होना स्वाभाविक ही है । कृषि का सम्बंध ऋतुओं से होने के कारण शरद, ग्रीष्म, वर्षा, बसंत ऋतुओं का भारतीय परम्पराओं में विशेष महत्व है । प्रत्येक ऋतु की अपनी एक फसल होती है तथा उससे जुड़े खेती के अनेक कार्य, खेती के कार्य करते समय या उसके उपरान्त गीत , नृत्य आदि का भारतभूमि पर विशेष महत्व है। जिससे कार्य करते समय थकान की अनुभूति नहीं होती तथा किसान लम्बे समय तक काम करता रहता है । ऋतुओं से जुड़े अनेक उत्सव हर्ष और उल्लास से मनाये जाते हैं । लोक संगीत में तो घर-बहार व कामकाज सबके लिए यहाँ अलग-अलग गीत हैं । लोक संगीत प्रायः सप्तक के दो-तीन स्वरों में गए जाते हैं लोक संगीत में भी ऋतुओं संबंधी मिश्रित रागों का प्रयोग है । भारतीय ग्रामीण जीवन में उत्सवों, पर्वों आदि की भरमार है तथा इससे गये जाने वाले गीतों रागों का एक विशेष ऋतु से सम्बंध पहले से ही स्थापित है । भारतवर्ष में ऋतुओं का संगीत में महत्त्व इतना है कि रविन्द्रनाथ टैगोर ने 'शरदोत्सव' नाट्य ग्रन्थ की रचना भी की, जो वर्ष १९०८ में प्रकाशित हुआ । शरद ऋतु के आगमन की तैयारी, शरद ऋतु का ठंडा अहसास तथा इस ऋतु के बाद की प्रकृति का सजीव चित्रण झलकता है । ये गीत सुगम श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। शुद्ध रागों के स्थान पर मिश्र रागों का प्रयोग करके गीतों द्वारा ऋतुओं के भावों तथा गुण का सजीव चित्रण किया है । इसी प्रकार 'बसंतोत्सव' भी धूम-धाम से मनाया जाता है । रविंद्रनाथ द्वारा रचे गए गीतों में एक मुख्य गीत इस प्रकार है ;

मोर वीणा उठे कौन सुरे बाजि
यह गीत राग मिश्र भैरव में निबद्ध है तथा इसमें बसंत ऋतु आगमन का पूर्वाभास प्रतीत होता है

झर-झर-झर रंगेर झरना

यह गीत राग बहार अड़ाना मिश्र में निबद्ध है ।

'वर्षामंगल' शान्तिनिकेतन में वर्षा ऋतु के उपलक्ष में मनाये जाने वाले उत्सव को 'वर्षामंगल' कहते हैं । वर्षामंगल के लिए रचे गए रविंद्रनाथ के अनेक गीत हैं उनमे से एक प्रमुख गीत इस प्रकार है ; बादल बाउल बाजए रे

यह गीत राग बिहाग ख़माज मिश्रित है । इसमें वर्षाकाल की अनुभूति का सजीव चित्रण है ।

शास्त्रीय संगीत और ऋतुओं का सम्बंध – भाव और रस की सफल निष्पत्ति के लिए भारतीय संगीत जगत विख्यात है । हमारे जीवन में भिन्न-भिन्न ऋतुओं की प्रकृति से भिन्न-भिन्न रसों की उत्पत्ति हुई जिसका प्रभाव यहाँ के संगीत पर भी पड़ा मुख्य रुप से 'बसंत' और 'मल्हार' राग ऋतुओं की ही देन हैं । वर्षा और बसंत में तो भावनाओं की भरमार है । प्रकृति के रंग-रस से सरोबार हो संगीत की हृदयतंत्री हिल उठती है । मुँह से स्वर निकले और राग खड़ा हो जाता है ।

यदि स्वर विशेष पर विचार करें तो यह बात ध्यान में रखनी होगी कि भारतीय संगीत भावना प्रधान होता है । अतः इन भावों को सकारता प्रदान करने के लिए स्वरों के माध्यम से संगीतकार ऋतु विशेष से प्रेरित होकर स्वरों के मेल से रागों को जन्म देता है ।वर्षाकालीन रागों के सम्बंध में जब हम विचार करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि इस ऋतु में मुख्य रुप से 'मेघमल्हार', 'मल्हार' या 'मियाँमल्हार', 'देस' और 'गौड़मल्हार' गाने का प्रचलन है। वर्षाकालीन रागों के निर्माण में किस प्रकार के स्वरों का विशेष रुप से प्रयोग होता है। यह भी राग निर्माण प्रक्रिया का मुख्य अंग है क्योंकि भारतीय संगीत में शब्दों से अधिक स्वरों का महत्व है । शब्दों का अस्तित्व यदि समाप्त भी कर दिया जाये तो भी रस का संचरण अबाध गति से प्राप्त होता रहेगा, तराने इसका उदाहरण हो सकतें हैं। यद्दपि अर्थपूर्ण शब्दों से संगीत को अधिक बल मिलता है ।

वर्षा-ऋतु के मुख्य राग 'मेघमल्हार', 'गौड़मल्हार' ही मने जाते हैं । परन्तु 'देस' और 'जयजयवंती' राग की चीज़ें को इस ऋतु में बड़े चाव से गाया-बजाय जाता है । आजकल वर्षा-काल में 'मल्हार', 'गौड़मल्हार' तथा देस राग ही अधिकतर गाये जाते हैं । इन सभी ऋतु-रागों की उत्पति 'काफी' और 'खमाज' थाट से है। 'मेघ' राग को छोड़कर शेष वर्षा-राग पूर्वांगवादी ही ठहरते हैं। 'मेघ'राग के अतिरिक्त इन शेष रागों की जातियों में भी बहुत समता है । अधिकतर शुद्ध स्वर से ही रागों की रचना की गई है । इस प्रकार के रागों में कोमल स्वरों का अल्प प्रयोग किया गया है । दोनों 'नि' स्वरों का प्रयोग सभी रागों में प्रायः समान रुप से किया गया है और कुछ रागों में कोमल 'ग' का भी प्रयोग है । विशेषकर 'मल्हार' और जयजयवंती रागों में बहुलता तीव्र (शुद्ध) स्वरों की ही है । यदि रागों के मुख्य अंग के सौंदर्या पर विचार करें तो 'गौड़मल्हार' राग का मुख्य अंग – रे प , म प ,ध नि सं ध नि प म , रे ग रे म ग रे सा । इन स्वर-लहरिओं को गुनगुनाने से हृदय में एक सरस भाव-चित्र की कल्पना होने लगती है । इस राग का 'तीनताल' में एक सुप्रसिद्ध शब्द-चित्र इस प्रकार है-

आए बदरा कारे-कारे ,हमरे कंथ निपट भए बारे

एसे समय परदेश सिधारे ।

एक तो मुरला वन में पुकारे ,

मोहे जरी को अधिक जरावे ।

है कोई ऐसो, पियु को मिलाये ,

उड़जा पंछी ,कौन बिसारे

इसी प्रकार 'मल्हार' वर्षा ऋतु का एक प्रसिद्ध मौसमी राग है । 'जयजयवंती' किसी ऋतु विशेष का राग नहीं है अपितु यह सर्वकालिक राग है ।

अतः हम देखते हैं के शास्त्रीय संगीत भी ऋतुओं से उतना ही प्रभावित है जितना लोक संगीत । खेत-खलिहान, नदी, झरने, पहाड़, मौसम आदि का वर्णन गीतों, बंदिशों में अनेक रंग भर देता है, स्वर-विशेष का प्रयोग शब्दों को जीवंत कर देता है । ऋतुओं के अनुसार अलग-अलग गीत, बंदिशें श्रोता को एक प्रकार के संगीत को सुनकर नीरस होने से बचाते हैं।

अविनाश कुमार

शोधार्थी, संगीत विभाग

विश्व विद्यालय - छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर)

हिंदी फ़िल्म संगीत के रोचक किस्से.....

'दिल ढूंढता है फिर वही' जो बन गया 'तेरे लिए हम हैं जिये'

हिंदी सिनेमा के मशहूर निर्माता निर्देशक यश चोपड़ा अपनी मानवीय संवेदनाओं से भरी फ़िल्में बनाने के लिए जाने जाते रहे। 2003-04 में वे एक भारतीय पायलट और पाकिस्तानी युवती की प्रेम कहानी पर आधारित फ़िल्म 'वीर ज़ारा' बना रहे थे। जब फ़िल्म के संगीत की बात आई तो यश जी ने एक अनूठा प्रयोग करने का सोचा। उन्हें पता लगा कि महान संगीतकार मदन मोहन (जिनकी मृत्यु 1975 में हो गयी थी) ने कुछ धुनें रेकॉर्ड करके रखी थीं जो किसी कारणवश फ़िल्मों में प्रयुक्त नहीं हो सकीं।

यश जी ने उन धुनों को सुनकर अपनी फ़िल्म के लिए उपयोग करने का निर्णय लिया। ऐसा इतिहास में पहली बार हुआ कि एक संगीतकार की मृत्यु के लगभग 30 वर्ष बाद उसकी बनाई धुनों को किसी फ़िल्म के लिए प्रयोग किया गया। इन धुनों पर गीत लिखने की ज़िम्मेदारी प्रख्यात गीतकार जावेद अख़्तर को दी गयी।

इसी फ़िल्म का एक युगल गीत जो बहुत लोकप्रिय हुआ 'तेरे लिए हम हैं जिये' उसकी मूल धुन सबसे पहले किस गीत के लिए बनी थी ये भी अपने आप में एक रहस्य है।

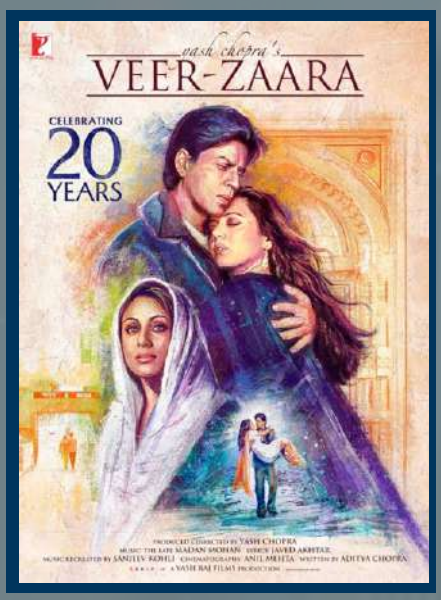

आप सभी ने 1965 में बनी फ़िल्म 'मौसम' का गीत 'दिल ढूंढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात दिन' ज़रूर सुना होगा जिसे संगीतबद्ध किया था मदन मोहन ने और लिखा था गुलज़ार ने। इस फ़िल्म में यह गीत दो बार, दो अलग अलग धुनों में आता है जो सबने सुना है ,लेकिन मदन जी ने इसी गीत की एक और धुन बनाकर अपनी आवाज़ में स्पूल टेप (उस समय रेकॉर्डिंग स्पूल पर की जाती थी) पर रेकॉर्ड करके रखी थी जो फ़िल्म में प्रयुक्त नहीं हुई। उसी धुन पर लगभग 40 साल बाद एक नई फ़िल्म का नया गीत कथानक के अनुसार लिखा गया 'तेरे लिए हम हैं जिये ,होठों की सिये' जो ख़ूब लोकप्रिय हुआ और सदाबहार गीत बन गया। सुखद संयोग यह रहा कि इस गीत को मदन जी की फ़ेवरेट गायिका लता जी ने ही आवाज़ दी ,इसमें उनका साथ दिया गायक रूप कुमार राठौड़ ने। इस फ़िल्म के सभी गीत सुपरहिट हुए।

इस प्रयोग ने यह भी साबित कर दिया कि यदि मूल धुन (कम्पोज़िशन) सुमधुर और प्रभावशाली है तो वह किसी भी युग में श्रोताओं पर अपना प्रभाव छोड़ सकती है।

संगीतकार मदन मोहन की आवाज़ में ये मूल धुन आज भी उपलब्ध है जिसका यूट्यूब लिंक यहां दिया जा रहा है।

https://youtu.be/U5Y1Mw5TV7M?si=pNW9gXtvjb-drCVq

https://youtu.be/Mkc7PbULZVs?si=0rC0s7QAcSib2Vb2

Dr. Gaurav Jain

Renowned vocalist and Associate Prof. Music Vocal,

Rajasthan Sangeet Sansthan,Jaipur

लोकरंग...

छत्तीसगढ़ का प्रसिद्धि लोक नृत्य - 'पंथी

पंथी नृत्य भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के पारंपरिक लोक नृत्यों में से एक है। यह अपनी ऊर्जा, ताल की धुन और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। 'पंथी' शब्द स्थानीय बोली का अपशब्द है, जो इस नृत्य के पारंपरिक तत्वों को दर्शाता है। पंथी लोक नृत्य अक्सर त्यौहारों और सामुदायिक समारोहों के दौरान किया जाता है। यह नृत्य, संगीत और कहानी कहने का मिश्रण है। छत्तीसगढ़ के पंथी नृत्य की विशेषताएँ

1. ऊर्जावान हरकतें: कलाकारों के उत्साह और भावना का चित्रण करने के लिए नृत्य में ऊर्जावान और उच्च शक्ति वाली हरकतें शामिल होती हैं।
2. पारंपरिक वेशभूषा: नृत्य को और अधिक नाटकीय और दृश्य बनाने के लिए कलाकार बहुरंगी और चमकीले पारंपरिक परिधान पहनते हैं।
3. संगीत और लय: नृत्य पारंपरिक संगीत के साथ होता है जिसे ड्रम और अन्य प्रकार के वाद्ययंत्रों पर बजाया जाता है जो लयबद्ध ताल देते हैं।

छत्तीसगढ़ के पंथी नृत्य का ऐतिहासिक विकास ÷

पंथी लोक नृत्य के बारे में पूरी तरह से तब तक नहीं जाना जा सकता जब तक कि इसे इतिहास में वापस न जाना पड़े - इस नृत्य की प्राचीन जड़ें छत्तीसगढ़ के प्राचीन समय से जुड़ी हुई हैं। यह प्रदर्शन सदियों से किया जाता रहा है और वास्तव में, इसकी जड़ें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं में बहुत गहरी हैं। माना जाता है कि यह नृत्य छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों द्वारा पूजा के साधन और विधा के साथ-साथ उल्लास के रूप में किया जाता था। आदिवासी संस्कृति से जुड़ाव यह नृत्य छत्तीसगढ़ की आदिवासी संस्कृति के भी बहुत करीब है। राज्य में आदिवासी समुदाय, मुख्य रूप से गोंड और बैगा जनजातियाँ, पंथी लोक नृत्य करती हैं। उनके पास अपने नृत्यों के माध्यम से कहानियाँ सुनाने की परंपरा है, और इस प्रकार पंथी नृत्य उनकी सांस्कृतिक मान्यता को चित्रित करने का एक साधन रहा है।

सांस्कृतिक उत्सव

यह नृत्य प्रदर्शन छत्तीसगढ़ में मनाए जाने वाले कई सांस्कृतिक उत्सवों से जुड़ा है। यह समुदाय को अपनी विरासत का जश्न मनाने और उसका जश्न मनाने के लिए एक साथ लाता है। यह नृत्य शैली लोगों की खुशी की भावना को दर्शाती है, जो उनके मूल और सांस्कृतिक जड़ों की याद दिलाती है।

कहानी कहने के रूप में नृत्य

इस नृत्य शैली का एक अनूठा पहलू यह है कि पंथी नृत्य का उपयोग कहानी कहने के माध्यम के रूप में किया जाता है। नर्तक नृत्य प्रदर्शन के माध्यम से लोकगीत और पौराणिक कथाओं को निभाते हैं। देवताओं, नायकों और पौराणिक हस्तियों की कहानियों का चित्रण नर्तकों द्वारा उनके आंदोलनों और चेहरे के भावों के माध्यम से अच्छी तरह से व्यक्त किया जाता है जो इसे दर्शकों के लिए मनोरंजक और सीखने का अनुभव दोनों बनाता है।

तैयारी

वेशभूषा की तैयारी में कलाकार पारंपरिक वेशभूषा के साथ तैयार होते हैं और रंगीन मेकअप का उपयोग करके चित्रण करते हैं। वेशभूषा आमतौर पर आकर्षक और बहुत ही अद्भुत पैटर्न और डिज़ाइन से सजी होती है, जो प्रदर्शन को और भी अधिक आकर्षक बनाती है। संगीतकार भी अपने वाद्ययंत्रों की मदद से ऊर्जावान प्रदर्शन के लिए दृश्य को चित्रित करते हैं।

नृत्य चरणों का क्रम

नर्तक एक वृत्त या अर्धवृत्त में नृत्य शुरू करेंगे जबकि कलाकार वाद्ययंत्रों को हिला रहे होंगे। नृत्य लयबद्ध चरणों, छलांगों और घुमावों की एक श्रृंखला से बना है; गति, जो ड्रम की धड़कन द्वारा की जाती है। लय हमेशा हाथों द्वारा उच्चारण की जाती है वास्तव में आंदोलन नाटकीय भावनाओं को व्यक्त करते हैं। पंथी लोक नृत्य में संगीत आम तौर पर पारंपरिक होता है और इसे अक्सर ड्रम, बांसुरी और गोंग जैसे वाद्ययंत्रों के उपयोग से बजाया जाता है। ड्रम नृत्य अनुक्रमों को लय देते हैं, जबकि बांसुरी की चमकदार धुन आंदोलनों को संगीतमय स्पर्श देती है। उक्त वाद्ययंत्र एक साथ मिलकर एक रोमांचक ध्वनि उत्पन्न करते हैं जो प्रदर्शन को सम्मोहक बनाता है। पंथी नृत्य वर्षों से विकसित हुआ है, समाज और संस्कृति के बदलने के साथ-साथ इसमें भी बदलाव आया है।

इस नृत्य को देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें

https://youtu.be/YdN1YygA5fE?si=MthMYvieYxF0ZOmt

https://youtube.com/shorts/ZBMXRHZwmMY?si=CNdjN sRieglwgoI

किताबों की बातें

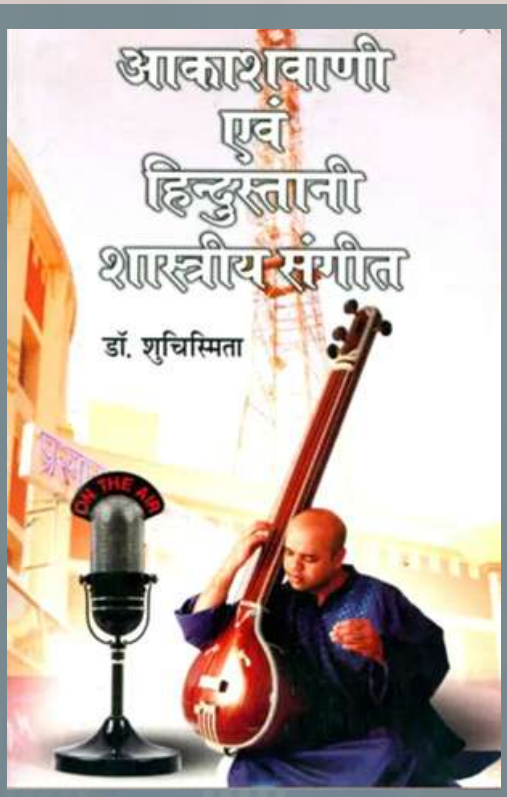

पुस्तक का नाम- 'आकाशवाणी एवं हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत'

लेखिका-डॉ शुचिस्मिता

प्रकाशक- कनिष्क पब्लिशर्स ,नई दिल्ली

भाषा -हिंदी

संस्करण- 2014

'आकाशवाणी एवं हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत' डॉ शुचिस्मिता द्वारा लिखित यह पुस्तक हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार के एक सशक्त माध्यम के रूप में आकाशवाणी की भूमिका पर तथा इनके मध्य दशकों पुराने प्राचीन संबंधों पर पारखी नज़र डालती है।

डॉ शुचिस्मिता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संगीत एवं नृत्य विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत हैं। आपने इस पुस्तक को चार अध्यायों में विभक्त किया है जिनमें आपने शास्त्रीय संगीत की आधुनिक व्यवस्थाएं , आकाशवाणी का विकास क्रम,आकाशवाणी कार्यक्रमों के संशोधन एवं निष्पादन पर चर्चा की है तथा साथ ही संगीत के भविष्य एवं उसमें आकाशवाणी की भूमिका का वर्णन किया है । यह पुस्तक न केवल आकाशवाणी व हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संबंधों पर कई अनुतरित प्रश्नों के उत्तर देती है साथ ही ,भविष्य के लिए कुछ सूत्र भी उपलब्ध करवाती है।

अपना Original Article ,हिंदी या English में E-Mail कर सकते हैं ।

हम अगले अंक में उसे सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

DOC /WORD format
हिंदी - Mangal, Laila /Unicode font

English - Times New Roman

Email - vandansangeet@gmail.com

Mobile/Whatsapp - 9664257501

For more details, Visit our website

www.sangeetvandan.in

Facebook Page

https://www.facebook.com/profile.php?id=100090183618512&mibextid=ZbWKwL

Instagram

https://instagram.com/sangeet.vandan?igshid=ZDdkNTZiNTM=

Twitter

https://twitter.com/vandansangeet?t=joYXnoPU8HxpDxhOd1mu4Q&s=08

Youtube

https://youtube.com/@SangeetVandan

GUIDELINES

Articles submitted for publication should be solely original and unpublished

All individuals listed as author or co-authors must made substantial contributions and approve the final version of the article to be published.

The contribution of other individuals/ organizations or sources should be recognized as per law.

Authors are responsible for any copyright clearance, factual inaccuracies and opinion expressed in their paper.

The editorial board will review article and the approved/recommended articles shall be published in the upcoming issues.

The views expressed in the articles are the views of author/authors. It is not essential for editorial board members to be in agreement or disagreement. The sole responsibilities of the views expressed in article are of the author/authors.

All decisions regarding members of Advisory board, Editorial board, Review board, Referee will rest with Editor-in –Chief.

DS
DESIGN STUDIO